डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्.ए.,बी.एड्.पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री. विकास सुरेश शेटे द्वारा लिखित " **गिरिराज शरण द्वारा संपादित 'शिक्षा जगत की कहानियां ' में व्यक्त यथार्थ** " लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथि : 29 JUN 2002

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

डॉ. शशीप्रभा जैन
एम्.ए., बी.एड्., पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर ।

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि श्री. विकास सुरेश शेटे ने मेरे निर्देशन में " **गिरिराज शरण द्वारा संपादित 'शिक्षा जगत की कहानियां ' में व्यक्त यथार्थ** " यह लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए पूर्व-योजना नुसार संपन्न हुआ है । इसमें शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है । जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । शोध-छात्र के कार्य से मैं पूर्णत: संतुष्ट हूँ । इस लघु शोध-प्रबंध को आद्योपांत पढ़कर ही मैं इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित करने हेतु अनुमति प्रदान करती हूँ ।

शोध - निर्देशिका

(**डॉ. शशीप्रभा जैन**)

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथि : **2 9 JUN 2002**

प्रख्यापन

'' गिरिराज शरण द्वारा संपादित 'शिक्षा जगत की कहानियां ' में व्यक्त यथार्थ '' यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

शोध-छात्र

(श्री. विकास सुरेश शेटे)

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथि : 29 JUN 2002

प्राक्कथन

प्राक्कथन

कहानी विधा में विशेष रूचि होने के कारण इसी विधा में अनुसंधान करने की जिज्ञासा मन में जाग उठी । अत: एम्.फिल. में प्रवेश मिलने के पश्चात् मैं शोध-निर्देशिका आदरणीय डॉ. सौ. शशीप्रभा जैन जी से मिला । उन्होंने मुझे गिरिराज शरण द्वारा संपादित ' शिक्षा जगत की कहानियां ' पुस्तक पढ़ने के लिए दी । पुस्तक पढ़ने के पश्चात् मैंने यह निश्चय किया कि मैं इस संपादित कहानी संग्रह पर अनुसंधान करूँगा । मैंने यह विषय इस लिए चुना क्योंकि इस कहानी संग्रह में चित्रित पात्र और परिवेश से ऐसा लगा की मैं भी इसी परिवेश का (शिक्षा-जगत) अंग हूँ । अध्ययन के उपरांत यह विषय शोध के लिए तय हुआ । अध्ययन के प्रारंभ में मेरे मन में जो प्रश्न उठे वे इस प्रकार हैं -

1. वर्तमान भारतीय शिक्षा जगत का स्वरूप कैसा है ?
2. शिक्षा जगत के आदर्श और यथार्थ में अंतर क्यों है ?
3. शिक्षा के आदर्श और यथार्थ के अंतर को मिटाने का उपाय क्या है ?
4. विवेच्य कहानियों में शिक्षा जगत की किन समस्याओं का चित्रण हुआ है ?
5. शिल्प की दृष्टि से क्या विवेच्य कहानियां सफल हुई है ?

समग्र अध्ययन के उपरांत प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए हैं वे शोध-प्रबंध के उपसंहार में दर्ज किए हैं । अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित पांच अध्यायों मे विभाजित कर विषयगत का विवेचन किया गया है ।

प्रथम अध्याय :-

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक है " शिक्षा से तात्पर्य और वर्तमान शिक्षा जगत का प्रारूप एक आकलन " इस अध्याय के अंतर्गत शिक्षा का शाब्दिक, शब्दकोशीय, संकुचित और व्यापक अर्थ का विवेचन किया है । इसके साथ भारतीय शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक विचार दर्ज किए हैं । वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति का भी विश्लेषण किया है । अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज हैं ।

द्वितीय अध्याय :-

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक है " गिरिराज शरण द्वारा संपादित कहानियों का संक्षेप में परिचय " इस अध्याय में कहानियों का संक्षिप्त परिचय देकर अंत में निष्कर्ष दर्ज हैं।

तृतीय अध्याय :-

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक है " विवेच्य कहानियों में शिक्षा जगत का व्यक्त यथार्थ " इसके अंतर्गत छात्रों, अध्यापकों, मुख्याध्यापक एवं प्राचार्यों, कुलपतियों और कर्मचारीयों से संबंधित व्यक्त यथार्थ का चित्रण किया है । अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज हैं ।

चतुर्थ अध्याय :-

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक है " विवेच्य कहानियों में व्यक्त यथार्थ समस्याएँ और समाधान " इसके अंतर्गत शिक्षा जगत की विभिन्न समस्याओं का उद्घाटन किया है । जैसे अध्यापकों के आर्थिक शोषण की समस्या, नौकरी में असुरक्षा की समस्या, गुटबाजी की समस्या, सदोष परीक्षा प्रणाली की समस्या आदि । कहानिकारों द्वारा सुझाए गए समस्याओं के समाधान भी दर्ज किए हैं । अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज हैं ।

पंचम अध्याय :-

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक है " विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन " इसके अंतर्गत शिल्प से तात्पर्य, विवेच्य कहानियों में प्रयुक्त संस्कृत, देशज, अरबी, फारसी और अंग्रेजी शब्द, मुहाँवरे और विभिन्न शैलियों का विवेचन किया है । समग्र विवेचन के पश्चात निष्कर्ष दर्ज हैं ।

अंत में उपसंहार के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार दिया है । इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के तथ्यों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष दर्ज हैं । अंत में आधार ग्रंथ एवं संदर्भ ग्रंथ की सूची दी गई है ।

शोध-निर्देशिका आदरणीय गुरुवर डॉ. शशीप्रभा जी जैन ने मुझे समय-समय पर महाविद्यालय और घर पर मार्गदर्शन किया है । साथ ही अपने महाविद्यालय का ग्रंथालय भी मेरे लिए खुला कर दिया है । आदरणीय गुरुवर आचार्य केशव प्रथमवीर जी भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे एवं यु. जी. सी. प्राध्यापक हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, आदरणीय गुरुवर डॉ. अर्जुन जी चव्हाण, अध्यक्ष, हिंदी

विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ने अपना अनमोल समय मेरे इस कार्य के लिए खर्च किया है । आदरणीय गुरुवर प्रा. अरविंद जी पोतदार ने भी समय-समय पर ' समय ' का महत्त्व बताकर इस कार्य को गति दी है । इस लघु शोध-प्रबंध के लिए आदरणीय सुजय व सुभाष जी ने ' विश्व के महान शिक्षाशास्त्री ' पुस्तक देकर मेरे इस अनुसंधान कार्य की नींव डाली है । इन गुरुवरों के साथ-साथ मेरे पूज्य माताजी-पिताजी के आशिषों से यह कार्य संपन्न हुआ है । मेरे मित्र भाऊसाहेब जी नवले ने भी मुझे मौलिक सहकार्य किया है । मैं इन सबके आशिषों को शब्दों में नहीं बांध सकता । लघु शोध-प्रबंध का सुचारू रूप से टंकन करनेवाले अनिल जी साळोखे और ज्ञात अज्ञात लोगों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई है । मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ । मैं इस लघु शोध-प्रबंध को विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ ।

लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता :-

1. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध " गिरिराज शरण द्वारा संपादित ' शिक्षा जगत की कहानियां ' में व्यक्त यथार्थ " शिक्षा जगत पर केंद्रित है । हिंदी साहित्य में गिरिराज शरण द्वारा संपादित ' शिक्षा जगत की कहानियां ' में व्यक्त यथार्थ इस लघु शोध-प्रबंध में स्वतंत्र रूप से अध्ययन पहली बार संपन्न हुआ है ।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में शिक्षा से संबंधित यथार्थ के विभिन्न पहलू प्राप्त होते हैं । उन पहलुओं को प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में सूक्ष्मता से व्याख्यायित एवं विश्लेषित किया है जो हिंदी अनुसंधान क्षेत्र में अपने आप में पहला अनुसंधान कार्य है ।

शोध-छात्र

स्थान : कोल्हापुर ।

(विकास सुरेश शेटे)

तिथि : 29 JUN 2002